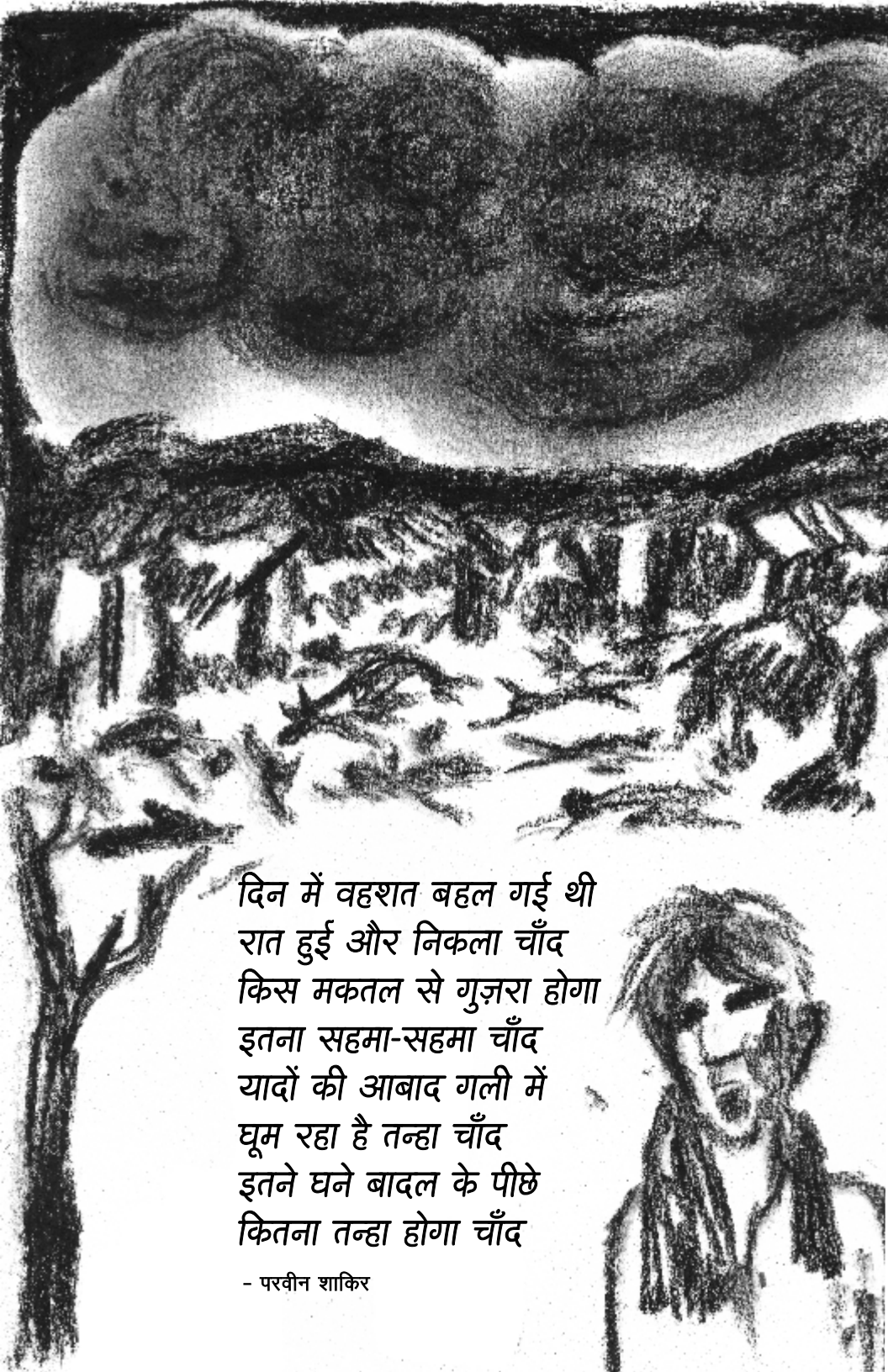

दिन में वहशत बहल गई थी
रात हुई और निकला चाँद
किस मकतल से गुज़रा होगा
इतना सहमा-सहमा चाँद
यादों की आबाद गली में
घूम रहा है तन्हा चाँद
इतने घने बादल के पीछे
कितना तन्हा होगा चाँद

- परवीन शाकिर

उदास मौसम के खिलाफ

दिसम्बर की ठण्डी-लम्बी रातों का महीना फिर आ गया। पूरे तीस साल हो गए हैं भोपाल के लोगों को, ऐसी ही एक दिसम्बर की काली सर्द रात को जानलेवा गैस खाए हुए। तुम जानना चाहते हो क्या हुआ था उस रात? दिसम्बर, 1984 की 2-3 तारीख की दरमियानी रात को भोपाल में यूनियन कार्बाइड कम्पनी के कीटनाशक बनाने वाले कारखाने से मिथाइल आइसोसायनेट और दूसरी ज़हरीली गैसों का रिसाव हुआ था। इस गैस ने न सिर्फ हज़ारों लोगों की जान ले ली, बल्कि लाखों को ऐसी बीमारियों का शिकार बना दिया जिससे वे आज भी छुटकारा नहीं पा सके हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने यह माना है कि गैस के तुरन्त प्रभाव से 2259 लोग मारे गए थे और कुल 3787 लोगों की जान जा चुकी है। पर कुछ और सरकारी एजेंसियाँ इस आँकड़े को 15,000 से ज़्यादा बताती हैं। सरकारी आँकड़ों के मुताबिक भोपाल की पूरी आबादी का लगभग दो-तिहाई हिस्सा – यानी कोई 5,00,000 लोग इससे प्रभावित हुए हैं। पर दूसरे स्रोत इस संख्या को लगभग 9,00,000 बताते हैं।

जो लोग उस हादसे में तुरन्त खत्म हो गए थे, वो तो चले ही गए। पर वो बच्चे जो उस समय छोटे-छोटे थे, बीमारियों से लड़ते हुए, रोज़गार की तलाश में, अपने हक के लिए संघर्ष करते बड़े हुए। उनमें से कई अब खुद बच्चों के माँ-बाप हैं। सबसे चिन्ताजनक बात यह है कि अगली पीढ़ी के ये बच्चे भी कई बीमारियों के साथ, सामान्य से अलग कई परेशानियों के साथ पैदा हो रहे हैं और परेशानहाल ज़िन्दगी जी रहे हैं।

भोपाल की एक सच्चाई यह भी है कि यूनियन कार्बाइड कम्पनी ने अमरीका के वर्जीनिया स्थित कारखाने में सुरक्षा के जो इन्तज़ाम किए थे, वो यहाँ की व्यवस्थाओं से बहुत बेहतर, बहुत चौकस थे। यानी, भारत को एक कमज़ोर विकासशील देश जानकर कम्पनी ने मुनाफा कमाने की होड़ में यहाँ के कर्मचारियों और आम लोगों के साथ खिलवाड़ कर डाला।

याद रखने की ज़रूरत, याद रखने की ज़िम्मेदारी

शायद तुम पूछो कि तीस साल बाद यह सब याद करके और परेशान होने की क्या ज़रूरत है? तो इसी साल की एक चौंकाने वाली बात तुमको बताते हैं। 13 सितम्बर 2014 को भोपाल गैस के मामले में प्रमुख आरोपियों के खिलाफ आपराधिक अभियोग तय करने सम्बन्धी केस की सुनवाई पर भारत के उच्चतम न्यायालय ने ऐसा फैसला सुनाया जिससे अब किसी भी व्यक्ति पर इस हादसे की ज़िम्मेदारी सुनिश्चित करने और दोषियों को सज़ा देने की सभी सम्भावनाएँ खत्म हो गई हैं। ऐसा करते हुए उच्चतम न्यायालय ने भोपाल की अदालत द्वारा इस मामले में दर्ज

किए गए और जबलपुर के उच्च न्यायालय द्वारा कायम रखे गए आरोपों को रद्द कर दिया, और कहा कि सरकार द्वारा प्रस्तुत "सबूतों" के आधार पर ज़्यादा से ज़्यादा यह कहा जा सकता है कि "तथाकथित" दुर्घटना कुछ लोगों के "असावधानी और उपेक्षा से किए गए काम" का नतीजा थी। यानी भोपाल के प्रभावित लोगों के साथ सरकार का धोखा बदस्तूर जारी है।

अब स्वास्थ्य के मामले को ही लो। यह शर्म की बात है कि इतने सालों में न तो केन्द्र सरकार और न ही राज्य सरकार ने प्रभावितों के स्वास्थ्य के मामले को गम्भीरता से लिया है। न तो गैस के प्रभावों पर लम्बी अवधि के कोई अध्ययन किए गए हैं और न ही प्रभावितों को दी जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं का व्यवस्थित लेखा-जोखा रखा जा रहा है। ये सारी चीज़ें लोगों के हक हैं। उनकी गलती नहीं थी कि वे भोपाल के बाशिन्दे थे। पर इसे हासिल करने के लिए लोगों को 30 सालों से लगातार संघर्ष करना पड़ रहा है। पर बीमारी, थकान, बेरोज़गारी और तनाव के बीच भी लोग पीछे नहीं हटे हैं। शहर के बाशिन्दों को आस है कि एक दिन तो उनके साथ न्याय होगा। जब तक नहीं होगा तब तक लड़ाई जारी रहेगी।

इस नोटबुक में...

सबसे पहले हम पढ़ेंगे कुछ ऐसे लोगों के बयान जो उस वक्त बच्चे थे जब 2 दिसम्बर 1984 की रात गैस रिसी थी और भोपाल शहर में तबाही मच गई थी। इनमें से कुछ से हम पिछले दिनों में मिले, तो कुछ से हम पिछले कई सालों में मिलते आए हैं। कुछ बयान चकमक के पुराने अंकों से लिए गए हैं।

इन बच्चों, युवाओं, प्रभावितों से हम प्रभावित इलाके में शुरू से अब तक काम कर रहे संगठनों की मदद से मिले हैं। इनमें भोपाल गैस पीड़ित महिला उद्योग संगठन, सम्भावना ट्रस्ट, चिल्ड्रन अगेंस्ट डाऊ-कार्बाइड[1] (डाऊ-कार्बाइड के खिलाफ बच्चे), चिंगारी ट्रस्ट और भोपाल गैस पीड़ित संघर्ष सहयोग समिति के साथी शामिल हैं। इनसे मिलकर हमने अभी के हालात, अभी की चुनौतियों और मुश्किलातों को जाना-समझा। उनकी मदद से हमने बच्चों से, उनकी माँओं से, उनकी देखभाल में लगे लोगों से बातचीत की।

तुम्हें पूरी नोटबुक में जगह-जगह इन सब लोगों की बातें, उनकी आवाज़ें मिलेंगी। साथ ही कई कवियों, लेखकों की आवाज़ें भी, जो तकलीफ और रोगों से परेशान लोगों का हाल भी बयाँ करती हैं और उन्हें अपने हकों के लिए लड़ाई जारी रखने का हौंसला भी देती हैं।

1 यूनियन कार्बाइड कॉरपोरेशन - यानी वह अमरीकी कम्पनी जो भोपाल का कारखाना चलाती थी - को अब डाऊ केमिकल्स नामक एक और अमरीकी कम्पनी ने खरीद लिया है। दुनिया भर के कम्पनी नियमों के हिसाब से अब यूनियन कार्बाइड कम्पनी से सम्बन्धित सभी लेना-देना की ज़िम्मेदारी डाऊ केमिकल्स की है।

देश और दुनिया में घट रहे हैं भोपाल...

भोपाल अकेला ऐसा शहर नहीं है जहाँ औद्योगिक हादसा हुआ है, हालाँकि यह दुनिया का सबसे बड़ा और संगीन हादसा ज़रूर है। तो दुनिया भर में जो और औद्योगिक दुर्घटनाएँ हुई हैं, वहाँ क्या हुआ? क्या वहाँ स्थितियाँ इससे बेहतर रहीं? क्या उनके बारे में पढ़कर हम भविष्य के लिए कुछ सीख सकते हैं? इसी उद्देश्य से इस नोटबुक में तुम पिछले 100 सालों में दुनिया भर में और आज़ादी के बाद से भारत में हुई कुछ घटनाओं के बारे में संक्षेप में पढ़ोगे। तुम देख सकोगे कि इटली के सेवेसो में किस तरह जन-संगठनों और सरकार ने मिलकर उस इलाके का अध्ययन किया जिससे वहाँ की सफाई और लोगों को मुआवज़ा और मदद का काम दोषी कम्पनी को उठाना ही पड़ा।

बगैर हादसों के भी घुल रहा है ज़हर, आहिस्ता-आहिस्ता...

लेकिन सचेत हमें सिर्फ कारखानों में होने वाले हादसों के प्रति ही नहीं होना है। कई ऐसे कारखाने हैं, उद्योग हैं जिनमें काम करना अपने आप में खतरनाक हो सकता है। या जो हवा में या पानी में या मिट्टी में ऐसे रसायन या प्रभाव छोड़ते हैं, जो आसपास रहने वाले लोगों पर ज़हर का काम करते हैं। ये प्रभाव इतनी धीमी गति से काम करते हैं कि अचानक देखो तो नज़र भी नहीं आते। पर कई सालों में उस इलाके के स्वास्थ्य या बीमारी के बारे में आँकड़ों के ज़रिए या लोगों के अनुभवों के ज़रिए मालूम करने पर पता चलता है कि वहाँ कोई धीमा हादसा घट रहा है।

तो इस नोटबुक में भारत में ही, हमारे बिलकुल आसपास के ऐसे आठ कारखानों के बारे में कुछ जानकारी दी गई है जो सचमुच चौंकाने वाली है। हमारा उद्देश्य तुम्हें चौंकाना या डराना नहीं है। यह इसलिए है ताकि तुम सब अपने आसपास के ऐसे कारखानों के बारे में और पता करो। अगर तुम्हारे इलाके में स्वास्थ्य या बीमारी के बारे में कोई अजीब बात दिखाई दे तो उस पर गौर करो। नोटबुक के पन्नों पर अपनी बातें दर्ज करो, अपने बड़ों से इसके बारे में बात करो और अपने दोस्तों से भी।

और तय करो कि इसके बारे में तुम क्या करना चाहते हो, क्या कर सकते हो।

- एकलव्य

नवम्बर 2014

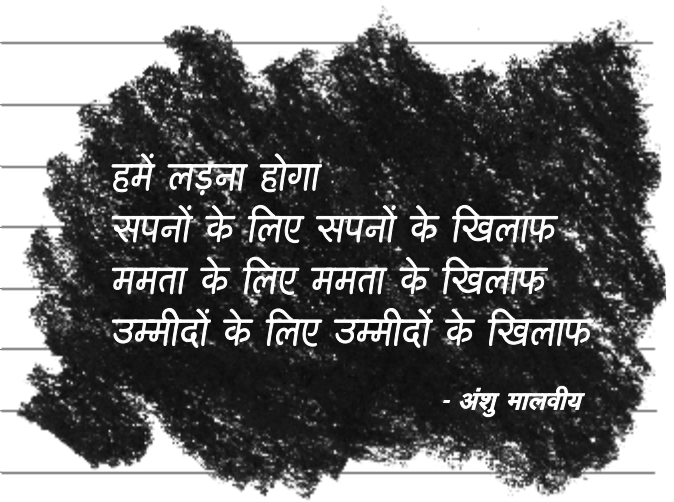

हमें लड़ना होगा
सपनों के लिए सपनों के खिलाफ़
ममता के लिए ममता के ख़िलाफ
उम्मीदों के लिए उम्मीदों के खिलाफ

- अंशु मालवीय

Let me ask you one question
Is your money that good
Will it buy you forgiveness
Do you think that it could
I think you will find
When your death takes its toll
All the money you made
Will never buy back your soul

- Bob Dylan